# महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

संस्कृत-विभाग

एम.ए. द्वितीय सत्र

प्रश्न पत्र- चतुर्थ

पाठ्यशीर्षक- योगदर्शनम्

कोड-SNKT 2004

## उपशीर्षक : योगसूत्र में चित्तवृत्ति विवेचन

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.बबलू पाल

सहायक आचार्य

# चित्तवृत्ति का अर्थ एवं भेद

सांख्य-योग दर्शन समानतन्त्रीय दर्शन हैं। किन्तु सांख्य दर्शन में जहाँ पच्चीस तत्त्वों को स्वीकार किया गया है वहीं योग दर्शन में एक अतिरिक्त तत्त्व ईश्वर को मानकर तत्त्वों की संख्या २६ स्वीकार की गई है। इन तत्त्वों के प्रादुर्भाव का मूलकारण प्रकृति है। इसी प्रकृति का परिणाम है चित्त जिसे अन्त:करण भी कहते हैं।

प्रकृति त्रिगुणात्मिका है और चित्त(अन्त:करण) प्रकृति का परिणाम है, अत: प्रकृति की भाँति चित्त भी त्रिगुणात्मक होता है-सत्त्व,रजस् और तमस् गुणों से युक्त। चित्त के तीन प्रकार के स्वभावों के आधार पर उसे त्रिगुणात्मक कहा जा सकता है। मनुष्य को उसके कार्यों में प्रवृत्त कराने वाला है अर्थात् उसके समस्त शारीरिक क्रियाओं का प्रेरक है। इस सन्दर्भ मे व्यासभाष्य में कहा गया है- *चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्।* चित्त के उक्त तीन प्रकार के स्वभावों को अग्रिम पंक्तियों में दर्शाया जायेगा।

# चित्त एवं आत्मा

क्या चित्त और आत्मा एक ही है? या दोनों पृथक्-पृथक् हैं । यह जानना इसलिए भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि जब तक शरीर में आत्मा सञ्चालित होती रहती है तभी तक ही समस्त शारीरिक क्रियाएँ भी सञ्चालित होती रहती हैं। यद्यपि आत्मा के शरीर से निकल जाने पर समस्त शारीरिक क्रियाएँ भी बन्द हो जाती हैं। तथापि चित्त और आत्मा दोनों शारीरिक क्रियाओं के अनिवार्य अंग हैं। चित्त और आत्मा दोनों को पृथक्-पृथक् रूप में जानना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है। क्योंकि इन दोनों में से किसी एक की भी अनुपस्थिति में दूसरे को जानना सम्भव नहीं है। आत्मा एवं चित्त के स्वरूप को निम्न रूप से देखा जा सकता है-

आत्मा- शरीर में चेतना का कारण

चित्त- चेतन शरीर द्वारा की जाने वाली शारीरिक क्रियाओं का कारण

विषयों की ओर प्रवृत्त होने के कारण उत्पन्न चित्त की वृत्तियाँ या अवस्थाएँ सांसारिक बन्धन का कारण बनती हैं।

विषयों की ओर प्रवृत्त होने वाली चित्त वृत्तियों का निरोध होने से चित्त को एक विषय में स्थिर किया जा सकता है जिससे पुरुष अपने यथार्थ स्थिति में विद्यमान हो सकता है।

चित्त के उपर्युक्त तीन प्रकार के स्वभावों को अधोलिखित रूप में समझा जा सकता है-

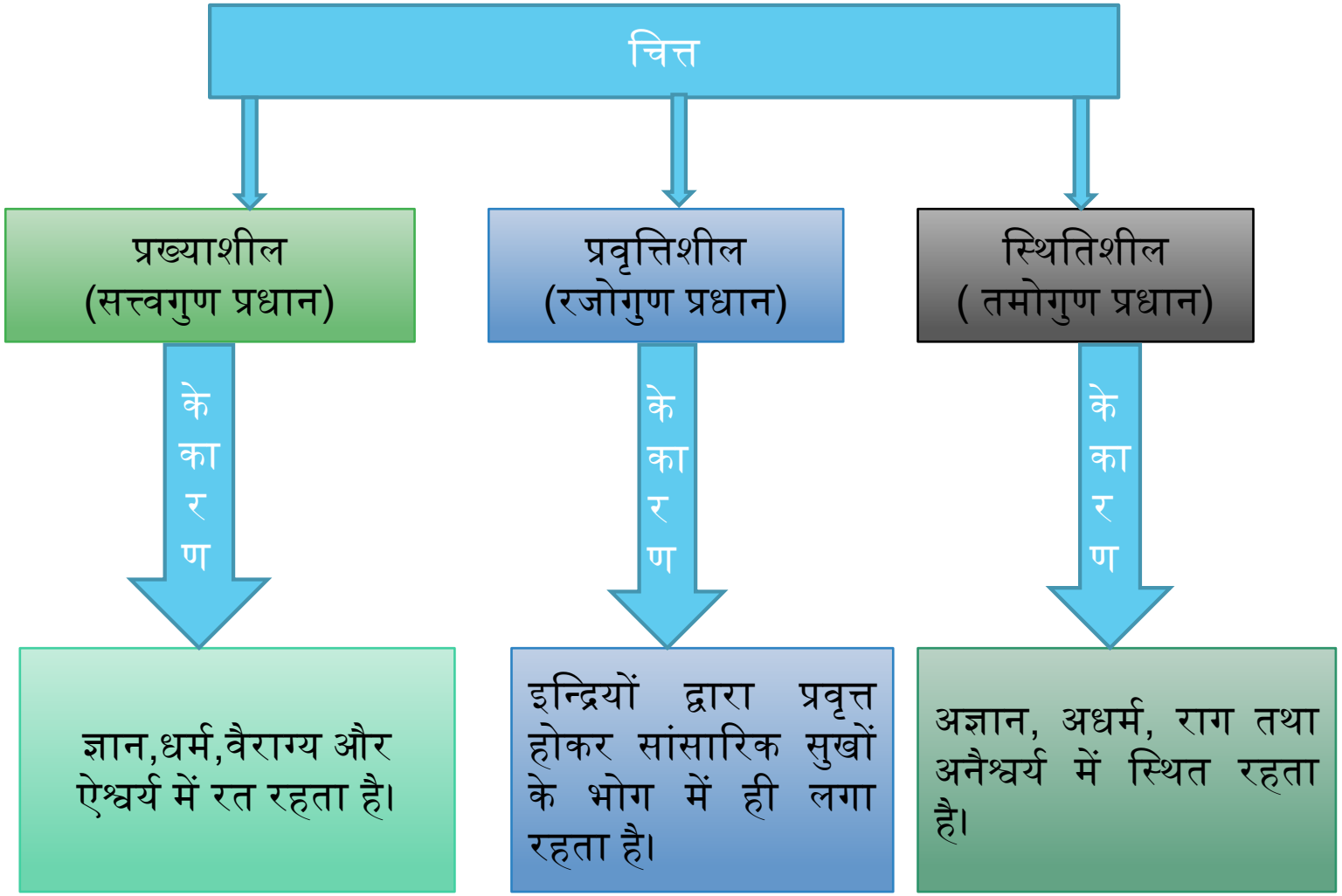

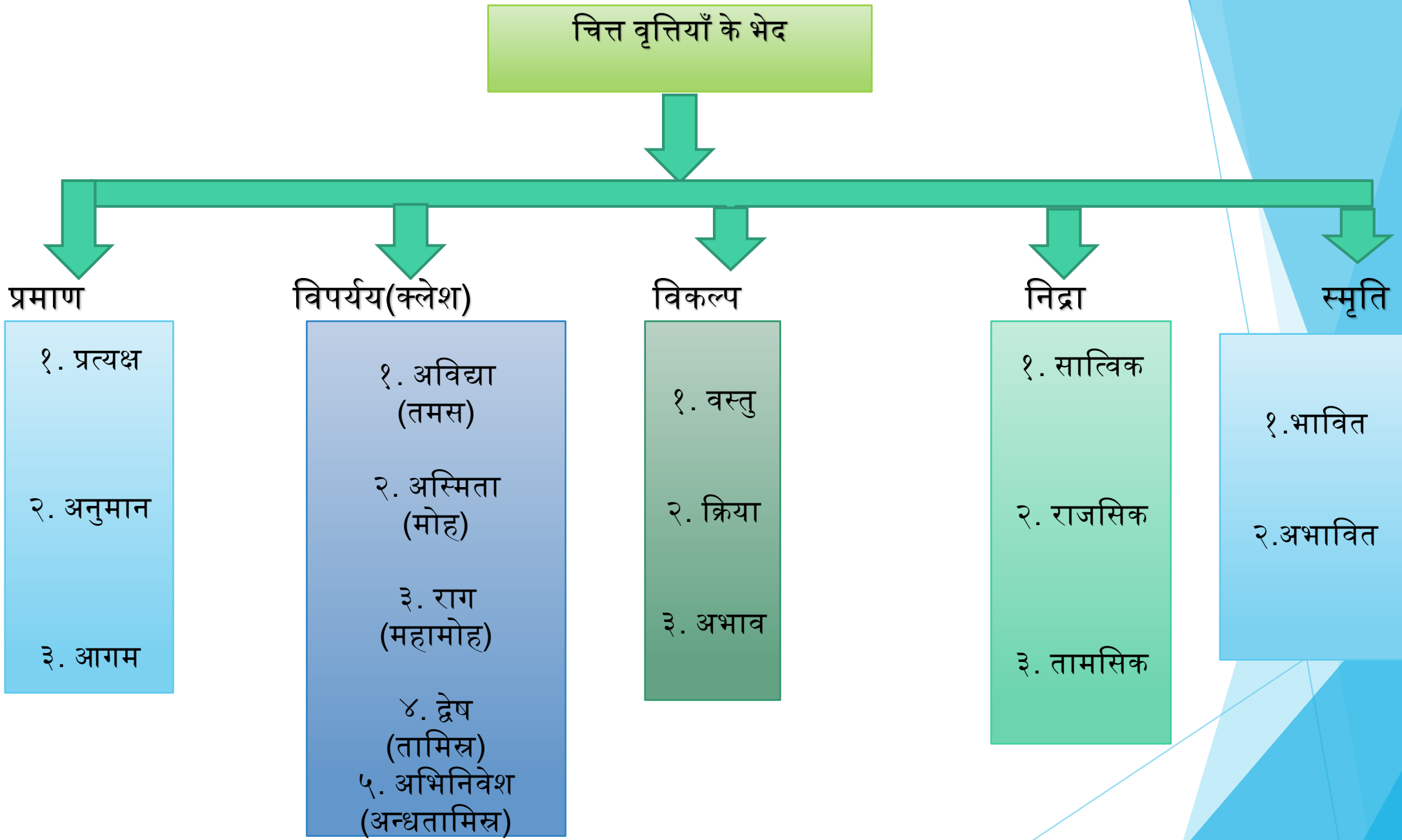
चित्त वृत्तियाँ के भेद
प्रमाण
१. प्रत्यक्ष
२. अनुमान
३. आगम
विपर्यय(क्लेश)
१. अविद्या (तमस)
२. अस्मिता (मोह)
३. राग (महामोह)
४. द्वेष (तामिस्र)
५. अभिनिवेश (अन्धतामिस्र)
विकल्प
१. वस्तु
२. क्रिया
३. अभाव
निद्रा
१. सात्विक
२. राजसिक
३. तामसिक
स्मृति
१.भावित
२.अभावित

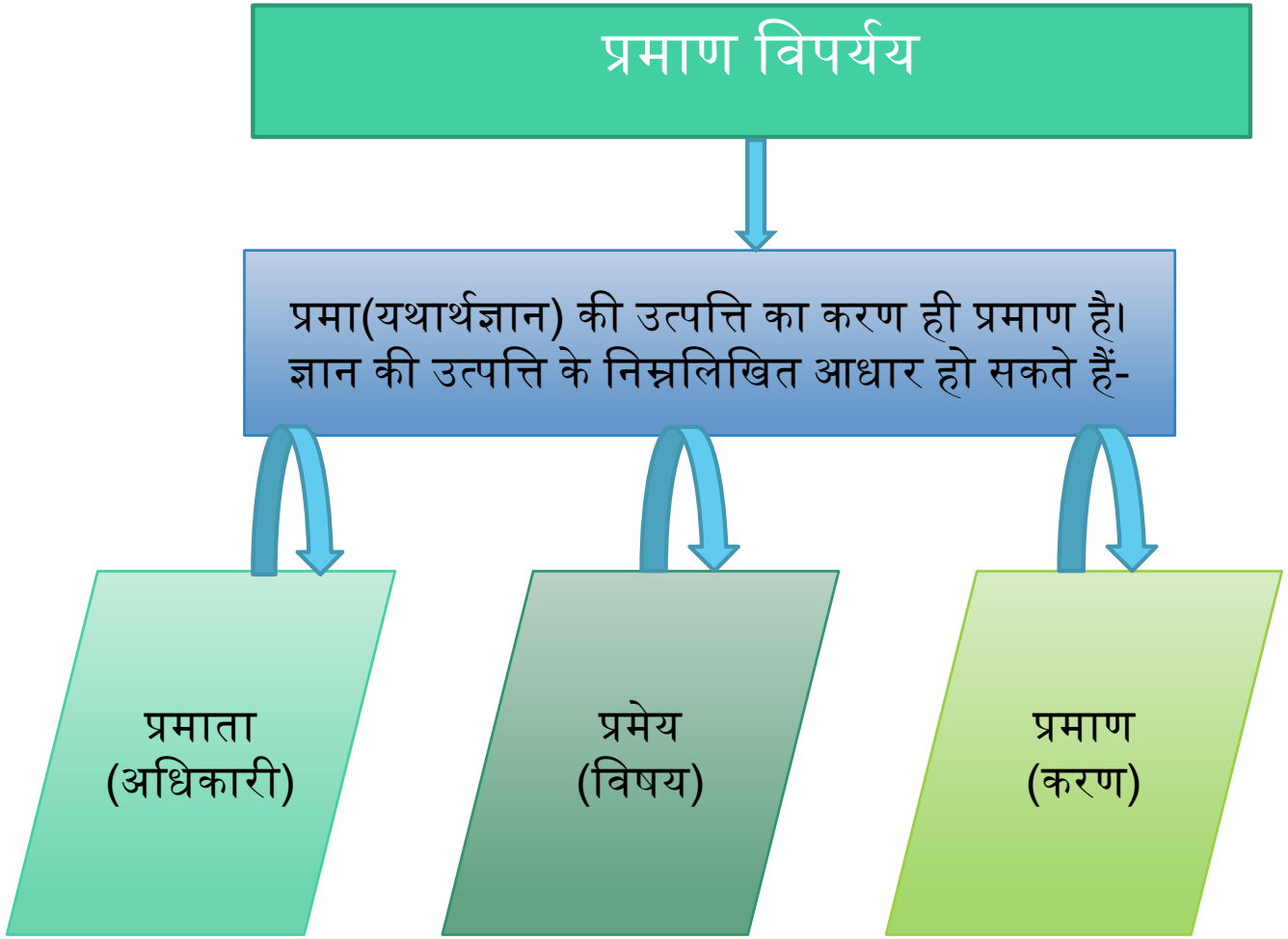
प्रमाण विपर्यय
प्रमा(यथार्थज्ञान) की उत्पत्ति का करण ही प्रमाण है।
ज्ञान की उत्पत्ति के निम्नलिखित आधार हो सकते हैं-
प्रमाता
(अधिकारी)
प्रमेय
(विषय)
प्रमाण
(करण)

# प्रमाण वृत्ति के भेद

- महर्षि पतञ्जलि ने अपने योगसूत्र में चित्त वृत्ति के रूप में परिगणित प्रमाण के तीन भेद बतलाया हैं।
- इस सन्दर्भ में उनका सूत्र है- *प्रत्यक्षानुमानमागमा: प्रमाणानि।* योगसूत्र-१/७

- प्रत्यक्ष प्रमाण
- अनुमान प्रमाण
- आगम प्रमाण

इन प्रमाण नामक वृत्तियों के क्लिष्ट व अक्लिष्ट स्वरूप को निम्न रूप से समझा जा सकता है-

# प्रमाण भेद

**प्रत्यक्ष प्रमाण :**

**क्लिष्ट स्वरूप-** ज्ञानेन्द्रियों द्वारा किसी ऐसे विषय का प्रत्यक्षीकरण जिससे चित्त विचलित हो जाता है, क्लिष्ट प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाता है। जैसे- नेत्रेन्द्रियों द्वारा स्त्री सौन्दर्य का प्रत्यक्ष ज्ञान चित्त को चंचल बना देता है।

**अक्लिष्ट स्वरूप-** नेत्रेन्द्रियों द्वारा किसी ऐसे विषय का प्रत्यक्षज्ञान जिससे चित्त में सात्विक विचार उत्पन्न हो जाते हैं वह प्रत्यक्ष प्रमाण का अक्लिष्ट स्वरूप होता है। जैसे-
अपने गुरु या ईष्ट की मूर्ति का प्रत्यक्षीकरण होने पर चित्त में सात्विक वृत्तियों का उत्पन्न होना। यह समाधि मार्ग में सहायक होता है।

# अनुमान प्रमाण नामक चित्त वृत्ति

महर्षि पतञ्जलि ने दूसरा प्रमाण अनुमान प्रमाण स्वीकार किया है। इसके क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट स्वरूप को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है-

**अनुमान प्रमाण नामक चित्त वृत्ति का क्लिष्ट स्वरूप-**

जब यह मोह या दु:ख को उत्पन्न करे तब यह क्लिष्ट स्वरूप वाला होता है।

जैसे- स्वाध्याय या ईश्वरोपासना करते समय किसी स्त्री के नूपुर की ध्वनि सुनाई देने पर इन्द्रियों का विचलित होकर उन विषयों के प्रति आकृष्ट हो जाना।

**अनुमान प्रमाण नामक चित्त वृत्ति का अक्लिष्ट स्वरूप-**

ज्ञानेन्द्रियों का सात्विक कार्यों की ओर प्रवृत्त होना इसका अक्लिष्ट स्वरूप है। जैसे- ऋचाओं का स्वर सुनकर इन्द्रियों को उस तरफ लगाना।

# आगम प्रमाण नामक चित्त वृत्ति

महर्षि पतञ्जलि ने तीसरा प्रमाण आगम प्रमाण को स्वीकार किया है जिसे शब्द-प्रमाण भी कहा जाता है। इसके क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट स्वरूप को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है-

**आगम प्रमाण नामक चित्त वृत्ति का क्लिष्ट स्वरूप-**

जब ज्ञानग्राही मनुष्य किसी अर्थ का अनर्थ करके कुकर्म में प्रवृत्त हो जाये तो उसका चित्त आगम प्रमाण नामक चित्त वृत्ति का क्लिष्ट स्वरूप होता है। जैसे- वेदों में हिंसा की बात को स्वीकार करके हिंसा कर्म में प्रवृत्त होना। या गीता में हिंसा का समर्थन करके हिंसक कार्यों में लगना।

**आगम प्रमाण नामक चित्तवृत्ति का अक्लिष्ट स्वरूप-**

वैसे तो आगम प्रमाण नामक चित्त वृत्ति अक्लिष्ट स्वरूप वाली ही होती है। किन्तु अपवाद स्वरूप यदि कोई मनुष्य अर्थ का अनर्थ करके कुकर्म में प्रवृत्त होता है जिसके कारण इसके क्लिष्ट स्वरूप को भी दर्शाया गया है।

# विपर्यय वृत्ति

- महर्षि पतञ्जलि ने विपर्यय नामक चित्त वृत्ति का लक्षण देते हुए कहा है-*'विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूप प्रतिष्ठम्'* अर्थात् किसी भी विषय या वस्तु का अयथार्थज्ञान मिथ्याज्ञान कहलाता है और मिथ्याज्ञान ही विपर्यय ज्ञान है। वेदान्दानुयायियों के उदाहरण द्वारा इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। जैसे- अन्धेरे में रस्सी को देखकर उसमें सर्प का आभास होना।
- वर्तमान समाज में भी इसका उदाहरण देखा जा सकता है क्योंकि समाज में ऐसे अनेक विषयों को मिथ्याज्ञान के रूप में अधिकांश लोगों द्वारा प्रसारित किया जा रहा है जिसका यथार्थज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।
- यह वृत्ति मनुष्य की सजगता को भ्रमित कर देती है जिससे व्यक्ति को कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध नहीं हो पाता और वह क्रोध या भावावेश में आकर भ्रामक प्रतिक्रिया दे देता है।
- जब व्यक्ति विषय या वस्तु से सम्बन्धित समस्त तथ्यों,परिस्थितियों और कारणों का अवलोकन किये बिना उस पर विश्वास कर लेता है या कोई प्रतिक्रिया दे देता है तो यही विश्वास या प्रतिक्रिया ही विपर्यय कहलाती है,इसी को अविद्या भी कहा जाता है।

विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्' विपर्यय नामक वृत्ति के लक्षण  में प्राप्त 'प्रतिष्ठ' शब्द को निम्नरूप से व्याख्यायित किया जा सकता है-

- प्रमाणयथारूप विषय प्रतिष्ठ
- विपर्यय अयथारूप विषय प्रतिष्ठ
- विकल्प वास्तवविषयवाची शब्द प्रतिष्ठ
- निद्रा तम या जडता विषय प्रतिष्ठ
- स्मृति अनुभूतविषयमात्र प्रतिष्ठ

# विपर्यय वृत्ति के क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट स्वरूप

**क्लिष्ट स्वरूप –**

जब मनुष्य की इन्द्रियाँ भ्रमित होकर किसी विषय या वस्तु का अयथार्थ ज्ञान कर विषयों के भोगों में प्रवृत्त होने लगती हैं तब विपर्यय वृत्ति का क्लिष्ट स्वरूप कहा जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि जब यह विपर्यय ज्ञान मनुष्य को पतनोन्मुख की ओर प्रवृत्त करे तब इसका क्लिष्ट स्वरूप होता है।

**अक्लिष्ट स्वरूप –**

जब यह विपर्यय वृत्ति मनुष्य की उन्नति का साधन बनता है तो यह अक्लिष्ट स्वरूप वाली विपर्यय वृत्ति कही जाती है। जैसे किसी उपासक द्वारा ईश्वर की मूर्ति को ईश्वर समझकर उसकी उपासना की जाती है तो इसे विपर्यय वृत्ति का अक्लिष्ट स्वरूप कहा जाता है।

# विपर्यय के भेद

विपर्यय को ही क्लेश भी कहा गया है जिनका उल्लेख करते हुए योगसूत्र में कहा गया है-

*अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशा: क्लेशा:।* योगसूत्र २/३

- अविद्या-
  - *अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रषुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्।* योगसूत्र.२/४

अर्थात् प्रषुप्त,तनु,विच्छिन्न और उदार इन चार अवस्थओं में विद्यमान रहने वाली तथा अस्मिता आदि चारों क्लेशों का कारण अविद्या ही है।

- *'अविद्याशुचिदु:खानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या'* अनित्य, अशुचि, दु:ख और अनात्मा आदि को क्रमश: नित्य,शुचि,सुख और आत्मा समझ लेना अविद्या है।

- अस्मिता-
  - *'दृग्दर्शनशक्योरेकात्मतेवास्मिता'* अर्थात् दृक्शक्ति(द्रष्टा) तथा दर्शनशक्ति(बुद्धि) इन दोनों का एक सा हो जाना ही अस्मिता है। द्रष्टा और बुद्धि ये दोनों तत्त्व सर्वथा एक-दूसरे से भिन्न तथा विलक्षण तत्त्व हैं। जहाँ द्रष्टा चेतन तत्त्व है वहीं बुद्धि जड तत्त्व है, अत: दोनों में ऐक्य स्थापित होना असम्भव है। किन्तु अविद्या के कारण दोनों में एकरूपता की प्रतीति होती है।

- राग

*सुखानुशयी राग:।* योगसूत्र,२/७

सुख की प्रतीति के पश्चात् रहने वाला क्लेश राग कहलाता है। अर्थात् सांसारिक विषयों के सुखों का एक बार भोग कर लेने के पश्चात भी मनुष्य में विषयों के प्रति पुन: भोग की प्रबल इच्छा ही राग नामक विपर्यय वृत्ति कही जाती है।

- द्वेष

*दु:खानुशयी द्वेष: ।* योगसूत्र,२/७ - दु:ख की प्रतीति के पश्चात् रहने वाला क्लेश द्वेष है।

अर्थात् दु:ख का अनुभव करने वाला कोई भी मनुष्य दु:ख के प्रति या दु:ख देने वाले के प्रति जो क्रोधभाव प्रकट करता है उसे द्वेष नामक विपर्यय वृत्ति कहते हैं।

- अभिनिवेश

*'स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेश:'।* योगसूत्र,२/७ – जो परम्परागत स्वभाव से प्रवाहमान है तथा जो मूढों की भाँति ज्ञानी पुरुषों में भी दृष्टिगत होता है वह मरणभय रूप क्लेश अभिनिवेश है। अर्थात् अन्तिम सत्य का अनुभव करने के पश्चात मनुष्य में जो पीडा उत्पन्न होती है उसे ही अभिनिवेश नामक विपर्यय वृत्ति कहते हैं।

# विकल्प वृत्ति

- महर्षि पतञ्जलि ने विकल्प नामक चित्त वृत्ति का लक्षण करते हुए कहा है- *शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः।* योगसूत्र,१/९

अर्थात् शब्द ज्ञान से उत्पन्न तथा वस्तुशून्य विकल्प वृत्ति कहलाती है। अभिप्राय यह है कि केवल शब्द के आधार पर अभाव पदार्थों की कल्पना करने वाली चित्तवृत्ति को विकल्प नामक चित्तवृत्ति कही जाती है।

- **विकल्प वृत्ति के क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट स्वरूप**

**क्लिष्ट स्वरूप**

जो चित्तवृत्ति वैराग्य में हेतु, योगसाधना में श्रद्धा एवं उत्साहवर्धिका तथा आत्मज्ञान में सहायक न हो वह विकल्प वृत्ति का क्लिष्ट स्वरूप है।

**अक्लिष्ट स्वरूप**

जो चित्तवृत्ति वैराग्य में हेतु, योगसाधना में श्रद्धा एवं उत्साहवर्धिका तथा आत्मज्ञान में सहायक हो वह विकल्प वृत्ति का अक्लिष्ट स्वरूप है।

# विकल्प वृत्ति के भेद

विकल्प नामक वृत्ति के तीनों भेदों को उदाहरणपूर्वक निम्न रूप से समझा जा सकता है-

- वस्तु विकल्प :  जैसे- पुरुषस्वरूपं चैतन्यमस्ति।
- क्रिया विकल्प : जैसे- बाणस्तिष्ठति।
- अभाव विकल्प : जैसे-  पुरुषोत्पत्ति धर्मशून्य:।

# निद्रा वृत्ति

- महर्षि पतञ्जलि ने अपने योगसूत्र में निद्रा वृत्ति का लक्षण करते हुए लिखा है-

*'अभावप्रत्ययालम्बनावृत्तिर्निद्रा'*। योगसूत्र, १/१०- अभाव के ज्ञान को ग्रहण करने वाली वृत्ति निद्रा वृत्ति है।

वृत्ति के क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट स्वरूप- योगसूत्रकार ने निद्रा वृत्ति के भी दो स्वरूप प्रतिपादित किया है जिसका संक्षिप्त उल्लेख निम्न प्रकार से है-

- **वृत्ति के क्लिष्ट –**

निद्रा जब परिश्रम के अभाव का बोध कराकर विश्रामजनित सुख में आसक्ति उत्पन्न करने वाली हो जाती है तो निद्रा का क्लिष्ट स्वरूप कहा जाता है।

- **अक्लिष्ट स्वरूप –**

निद्रा से उठने के पश्चात् जब साधक की इन्द्रियों में सात्विकभावों का संचार होने लगता है तथा आलस्य का अभाव हो जाता है तब वह निद्रावृत्ति का अक्लिष्ट स्वरूप होता है।

- **निद्रावृत्ति के भेद –**

१.सात्विक

२.राजसिक

३.तामसिक

# स्मृति वृत्ति

- *अनुभूतविषयासम्प्रमोष: स्मृति:*'। योगसूत्र,१/११ अर्थात् अनुभव किये गये विषय का प्रकट हो जाना स्मृति है। तात्पर्य यह है कि प्रमाण,विपर्यय,विकल्प तथा निद्रा इन चतुर्विध वृत्तियों के माध्यम से अनुभव किये गये विषयों के चित्त पर पडने वाले संस्कार का पुन: किसी निमित्त को प्राप्त कर स्फुरित हो जाना स्मृति है। यह वृत्ति भी क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट स्वरूप स्वरूप वाली है।
- **वृत्ति के क्लिष्ट –**

  जिस स्मृति वृत्ति के द्वारा मनुष्य में भोगों से राग-द्वेष बढता है वह स्मृति वृत्ति का क्लिष्ट स्वरूप है।
- **अक्लिष्ट स्वरूप-**

  जिस स्मृति से मनुष्य का भोगों के प्रति वैराग्य हो,योगसाधना में श्रद्धा तथा उत्साहवर्धन हो और आत्मज्ञान में सहायता प्राप्त हो वह स्मृति वृत्ति का अक्लिष्ट स्वरूप है।

**स्मृति वृत्ति के भेद-**

१. भावित

२. अभावित

धन्यवाद